P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-10, ISSUE-1 August -2021
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

किशोर छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक समायोजन का अध्ययन

Study of Emotional Maturity and Social Adjustment of Adolescents

Paper Submission: 05/08/2021, Date of Acceptance: 13/08/2021, Date of Publication: 22/08/2021

रश्मि गोरे
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक समायोजन सुव्यवस्थित समायोजित व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण शीलगुण होते हैं जो व्यक्ति के जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाते हैं।किशोर विद्यार्थी देश के भविष्य की दिशा को निर्धारित करते हैं। अतः किशोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक समायोजन को ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में 200 हिंदी तथा 200 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा शोध निष्कर्षो में हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम के विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से समान परिपक्व पाए गए, किंतु अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियोंका सामाजिक समायोजनका स्तरहिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक था।

Emotional maturity and social adjustment are the important qualities of a well-adjusted personality, which make a person's life Qualitative. Adolescents determine the future of the country.Therefore to know emotional maturity and social adjustment of adolescents a sample of 400 students 9th class were taken of. Results revealed that the level of social adjustment of English medium students was higher than that of Hindi medium students but both the groups were at par regarding emotional maturity.

मुख्य शब्दः किशोर विद्यार्थी, संवेगात्मक परिपक्वता, सामाजिक समायोजन।

Adolescent Students, Emotional Maturity, Social Adjustment.

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है तथा गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने के योग्य बनाती है। शिक्षा बालकों की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करती है ताकि वे राष्ट्र की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। युवा शक्ति के संदर्भ में भारत का विश्व में महत्वपूर्ण स्थान है।भारतीय जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार भारत की युवा जनसंख्या उसकी कुल जनसंख्या के 34.8% है।1.विद्यालय समाज का लघु रूप होता है(डी.वी. जॉन 1907), जहां छात्रों के शारीरिक व मानसिक विकास के साथ-साथ सामाजिक,सांवेगिकएवं चारित्रिक तथा सांस्कृतिक विकास भी होते हैं।वे परस्पर सहयोग,भ्रातृत्व,समन्वय,प्रेम, सहिष्णुता इत्यादि मूल्यों को सीखते हैं, जो किसी भी सभ्य समाज के लिए अति आवश्यक है। बालक बाल्यावस्था के उपरांत किशोरावस्था में प्रवेश करता है। लगभग 11-12 से 18-19 वर्षतक की अवस्था किशोरावस्था कहलाती है।विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) द्वारा किशोरावस्थाकीउम्र10 से 19 वर्ष स्वीकार की है (पुष्प लता,सी.एवं शशि रूपा (2015)। किशोरावस्था का अंग्रेजी रूपांतरण'एडोलिसेंस' है जिसका अर्थ है परिपक्वता की और बढ़ना अर्थात 'बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था' तक पहुंचने के मध्य का सफर जो कि उथल- पुथल वतनाव भरा भी है,(रानी,ए.,2016)।स्टैनले हॉल (1704) ने किशोरावस्था को संघर्ष, तूफान और विरोध की अवस्था कहा है।ई.ए.किलपैट्रिक ने किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल कहा है।वास्तव में किशोर ही वर्तमान की शक्ति एवं भावी आशा को प्रस्तुत करता है (क्रो एंड क्रो)।इस अवस्था में किशोर विद्यार्थियों के लिए, निर्देशन तथा परामर्श की विशेष व्यवस्था करना अति आवश्यक है, क्योंकि किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था है। इस अवस्था में जहां विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं व्यवसायिक परामर्श की आवश्यकता होती है(रे,राजीब,2011), वही उचित समायोजन एवं संवेगों के व्यवस्थित संचालन एवं नियंत्रण तथा प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होती है।संवेग व्यक्ति में अतिरेक शक्ति का संचार करता है संवेगों का संबंध भावनात्मक पक्ष से होता है। परिपक्वता आंतरिक विकास की प्रक्रिया है। संवेगात्मक परिपक्वता जीवन की चुनौतियों का सामना करके प्रतिकूल परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होती है। किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता को स्वास्थ्य,वंशानुक्रम,परिवार,सामाजिक- आर्थिक स्थिति, परिजनों का शैक्षिक स्तर, घर एवं विद्यालय का वातावरण इत्यादि सभी कारक प्रभावित करते हैं। किशोरावस्था ऐसी संधि अवस्था है जिसमें शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ मानसिक रूप से भी कई परिवर्तन होते हैं। संवेगों का ज्वार या अतिरेक,नेतृत्वकी बलवती भावना,मूल्यांकन एवं सृजनशक्तियों का विकास आदि। समाज में उचित समायोजन ना हो पाने पर उसके व्यक्तित्व में असंतुलन उत्पन्न होने का भय रहता है जो उस में अनुशासनहीनता उग्रता, असंतोष,व्यग्रता, अराजकता जैसेनकारात्मक प्रवृत्तियोंकोजन्म देता है।यह इस अवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता हैं।मनुष्य एक सामाजिकप्राणीहै।समाज के मानकों के अनुरूपव्यवहारकरके वह समाजमें सम्मानपाना चाहताहै।यह उसकी एक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है ((मैस्लो,ए.एच.,1943) । इस तरह वह समाजका स्वीकृत सदस्यबनकर उचितसमायोजनका प्रयास करताहै। समाज में उचित समायोजन न हो पाने पर उसके व्यक्तित्व में असंतुलन उत्पन्न होने का भय रहता है जो उसमें अनुशासनहीनता उग्रता,असंतोष, अराजकता जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों को प्रबल कर सकता है और उनके व्यक्तित्व के लिएनुकसानदायक होसकती है।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है किंतु कुछ कारणों से हिंदी एवं इंग्लिश माध्यम के विद्यालयों के

विद्यार्थियोंमेंभाषा को लेकर कुछ पूर्वाग्रहदेखने को मिलते हैं।ये कभी कभीअन्य मनोवैज्ञानिकगुणोंको भी प्रभावितकरते हैं। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में अधिकांशतःआत्मविश्वास, निडरता ,मुखरता,उच्च स्व-प्रत्यय इत्यादि गुण देखने को मिलते हैं । ऐतिहासिक कारणों से भारतीय समाज में आज भी अंग्रेजी बोलने को श्रेष्ठ एवं हिंदी बोलने को हेय दृष्टि से देखा जाता है। परोक्ष रूप से यह छात्रों के व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है।सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक समायोजन के संबंध में पूर्व में किए गए कुछ शोध अध्ययन के विवरण इस प्रकार है:-झाझडिया, राजेंद्र प्रसाद(2015) ने किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक परिपक्वता में अंतर था।सैनी, सतीश चंद्र (2019) किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया एवं पायाकि सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थी संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ में भिन्नता रखते हैं वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति ना होने पर हीनता महसूस करते हैं तथा मानसिक रूप से अधिक उलझन महसूस करते हैं। ऐसे छात्रों में आत्मअसंतुष्टि,बेचैनी, चिड़चिड़ापन इत्यादि व्यवहार देखने को मिलते हैं। ऐसे छात्र मित्रों -साथियों के साथसामंजस्य नहीं बिठा पाते तथा एकाकीपन पसंद करने लगते हैं। इससे उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं। सुब्बाराया के तथा जी विश्वनाथन(2011) ने कॉलेज विद्यार्थियों को सांवेगिक रूप से अत्यंत अस्थिर पाया।

शर्मा,भारती (2012) ने प्रथम वर्ष के कॉलेज विद्यार्थियों में सांवेगिक परिपक्वता का स्तर अत्यंत निम्न पाया वे अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की तुलना में नवीन सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण में सामंजस्य बिठाने में अत्यधिक कठिनाई महसूस कर रहे थे अंतिम वर्ष के विद्यार्थी सांविधिक रूप से अधिक परिपक्व पाए गए तथा कॉलेज के सामाजिक वातावरण में उनका समायोजन प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों की तुलना में काफी अच्छा था।कुमार, सुनील (2014) ने किशोरों के सांवेगिक परिपक्वता पर अध्ययन कर पाया कि किशोर छात्र एवं छात्राएं सांवेगिक परिपक्वता के संदर्भ में एक दूसरे से भिन्न है। साथ ही उन्होंने यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया कि सामाजिक परिपक्वता तथा पारिवारिक संबंध सार्थक रूप सेसह-संबंधित हैं।जॉय मोले एवं ए मैथ्यू (2018) ने अपने अध्ययन में किशोर छात्रों के सांवेगिक परिपक्वता एवंकुशलता में सार्थक सहसंबंध पाया।हंगल सुनीता एवं विजयलक्ष्मी(2007) नेअपने शोध मेंपाया कि कार्यरत माताओं के बच्चों में, घर में रहने वाले माताओं के बच्चों की अपेक्षासांवेगिक परिपक्वता अधिक थी।जोज़,आर.एवंआर. सुजाथा (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोर लड़कियों की सांवेगिक परिपक्वता किशोर छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। इसके साथ हीशोधअध्ययन मेंसांवेगिक परिपक्वता एवं लिंग, पूर्व कक्षाओं में कुल प्राप्तांक, माता-पिता का शैक्षिक स्तर, माता पिता के व्यवसाय तथा मासिक आय में सार्थक संबंध पाया गया।दीपशिखा, सुमन भनोट (2011) ने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक वातावरण जैसे अभिव्यक्ति द्वंद, स्वीकृति एवं परवाह, स्वतंत्रता, सक्रिय मनोरंजन, संगठन एवं नियंत्रण इत्यादिकी किशोर लड़कियों केसामाजिक,सांवेगिक तथा शैक्षिक समायोजन के संदर्भ में विशेष भूमिका होती हसिडनीसिडनी एल एंड अदर्स (2000) ने अपने अध्ययन में पाया किसामाजिकसमायोजनमें कमी किशोरों को शिजोफ्रेनिया जैसी बीमारी की ओर ले जा सकती है। मी,नी.हसीओ एंड अदर्स (2013) ने अपने शोध में पाया कि स्वलीनता या ऑटिज्म जैसे व्यवहार निम्न शैक्षिक उपलब्धि से सहसंबंधित है। इसके साथ ही साथ विद्यालय एवं शिक्षक तथा सहपाठियों के प्रतिनकारात्मक या उदासीन अभिवृत्ति, व्यवहार संबंधी समस्याएं, सहपाठियों के साथ अन्तःक्रियायावार्तालापमेंसमस्याअथवाकठिनाईआदि भी स्वलीनता व्यवहार के साथ सहसंबंधितहैं।खरे, कनिका(2020) ने आक्रामक एवं सामान्य किशोरों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया और पाया कि सामान्य किशोरों का समायोजन स्तर आक्रामककिशोरों के समायोजन स्तर की तुलना में उच्च है किंतु आक्रामक किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं था।सिंह, लक्ष्मी एवं विजय शुक्ला(2018)शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि और शासकीय तथा अशासकीय विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर सामान्य था एवं दोनों में सार्थक अन्तर नही था। घटक, राखी(2018)ने वेस्ट बंगाल, हुगली प्रांत के सिंदूर ब्लॉक के दो शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों पर शोध किया और पाया कि लिंग के संदर्भ में किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर था। किशोर छात्राओं का समायोजन स्तर किशोर छात्रों के समायोजन स्तर से उच्च था जबकि क्षेत्र के संबंध में किशोर एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं था।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

H_1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता केमध्यमानों में सार्थक अंतर है।

H_2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है।

अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन कानपुर शहर के माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, यूपी बोर्ड से मान्यता प्राप्त हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों तथा अंग्रेजी माध्यम के सीबीएसई, दिल्ली बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों तक सीमित है

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा अध्ययन किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन के लिए कानपुर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के मान्यता प्राप्त हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के कक्षा 9 के सभी किशोर विद्यार्थियों को जनसंख्याके रूप में लिया गया है।

न्यादर्श

अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार कानपुर नगर के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया तथा चयनित वर्ग में उपस्थित सभी विद्यार्थियों का आकस्मिक विधि द्वारा चयन करउन्हेन्यादर्श में सम्मिलित किया।इस प्रकार 200 हिंदी तथा 200 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का चयन न्यादर्शके रूप में निम्न प्रकार से किया गया :-

तालिका- 1

चयनित न्यादर्श का विवरण

क्रम संख्या	शिक्षण का माध्यम	चयनितविद्यार्थी
1	हिंदी	200
2	अंग्रेजी	200
	योग	400

उपकरण

अध्ययन के उद्देश्यों कीओभिपूर्ति के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया।–

1. संवेगात्मक परिपक्वता के मापन के लिए प्रमापीकृत सिंह एवं भार्गव इमोशनल मेच्योरिटी स्केल का उपयोग किया गया है। जिसमें संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक दमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा नेतृत्व हीनता ऐसे 5 क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक .76 है।
2. सामाजिक समायोजन का मापन करने के लिए प्रामाणिक परीक्षणदेवा सोशल एडजेस्टमेंट इन्वेंटरी का उपयोग किया गया है। इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक .91 तथा विषय वस्तु वैधता .81 है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

Ho1 –उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका-2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' मान

क्रम संख्या	चर (तुलनात्मक समूह)	संख्या	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुक्तांश (df)	टी मान	सार्थकता स्तर (0.05)
1	हिंदी माध्यम के विद्यार्थी	200	63.42	24.21	398	**1.68**	**NS**
2	अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी	200	67.88	29.11			

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि‘टी'कापरिकलितमान1.68 है जो मुक्तांश398 पर द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.97 से कम है।अतः शून्यपरिकल्पनाको स्वीकृत किया जाता है तथा वैकल्पिक परिकल्पना कोअस्वीकृत किया जाता है।निष्कर्षस्वरुप हम कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरता हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों माध्यम के विद्यार्थी सांवेगिक रूप से स्थिर पाए गए।

Ho2 -उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजनके मध्यमानोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका- 3

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान,मानक विचलन तथा‘टी' के मान

क्रम संख्या	चर (तुलनात्मक समूह)	संख्या	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुक्तांश (df)	‘टी'मान	सार्थकता स्तर (0.05)
1	हिंदी माध्यम के विद्यार्थी	200	84.79	21.35	398	7.19	सार्थक
2	अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी	200	107.81	37.80			

तालिका –2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 'टी' का परिकलित मान 7.19 है जो मुक्तांश 398पर द्विपुच्छीयपरीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.97 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए वैकल्पिक परिकल्पना,कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है,स्वीकृत की जाती है।अंग्रेजी माध्यम केविद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

1. सांवेगिक परिपक्वता के संदर्भ में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। दोनोंही सांवेगिक रूप से स्थिर हैं।
   वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग हैजिसमें सभी लोगों को सभी प्रकार की सूचनाएं निरंतर प्राप्त होने के अवसर उपलब्ध होते हैं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के पास भी इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है। सामान्य रूप से किशोर अपने रोल मॉडल्स का अनुसरण करते हैं।बड़े-बड़े साहित्यकार कवि लेखक वैज्ञानिक नेता भक्त संत और महापुरुषों के संवेग के शोधन के कारण उनके द्वारा प्राप्त किए गए उच्च सफलता से प्रभावित इसका एक प्रमुख कारण हो सकता है। समाज में प्रेम,सहानुभूति, उच्च जीवन मूल्य इत्यादि कोमिलनेवाले विशेष सम्मान से भी किशोर छात्रों को सांवेगिक रूप से परिपक्व होने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। यही कारण हैकिउच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों ही माध्यम के विद्यार्थीसमानरूप से सांवेगिक परिपक्वपाए गए।
2. सामाजिक समायोजन के संदर्भ में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के किशोर विद्यार्थियों में सार्थक अंतर है।अंग्रेजीमाध्यमकेविद्यार्थियोंकासामाजिकसमायोजन हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है।हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के पास अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में शैक्षिक तथा सहपाठ्यगामीक्रियाओं भाग लेने की सुविधाएं सीमित होती है जिसके कारण उनमें तनाव उत्पन्न होता है और यह तनाव कभी-उनके सामाजिक समायोजन में बाधा उत्पन्न करता है।

शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक निहितार्थ रखते हैं।भारत में माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के बीच महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है बालकों की किशोरावस्था का अधिकांश समय माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हुए व्यतीत होता है यह अवस्था संघर्ष तूफान व तनाव की अवस्थाकहीं गई है जब तक विद्यार्थी का मन स्वस्थ एवं संवेग परिपक्व नहीं होंगे तब तक वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण नहीं होगा। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है मैस्लोके अनुसार समाज के सदस्यों की स्वीकृति एवं उनसे मिलने वाला स्नेह एवं सम्मान की आवश्यकता की पूर्ति होने पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का उचित समायोजन हो पाता है। प्रतिकूल परिस्थिति के कारण विद्यार्थी अनावश्यक संवेगात्मक उत्तेजना महसूस करता है तथा समाज एवं परिवार में अव्यवस्थित एवं और असमायोजित महसूस करने लगता है उसकी यह स्थितिउसके विद्यालय के वातावरण को भी प्रभावित करती है और इस प्रकार अंततोगत्वाउसकीशैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

भारतीय समाज मेंआज भी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के प्रति विशेष रुझान दिखाई देता है जिसका जिसका प्रमुख कारण है अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में साधनों की उपलब्धता जैसे लाइब्रेरी, म्यूजियम्स,, खेलकूद के लिए प्ले ग्राउंड तथा अन्य आवश्यक उपकरण,प्रयोगशालाएं, कुशल शिक्षक, कंप्यूटर्स, काउंसलर्स, इत्यादि होते हैं तथा सभी प्रकार की अकादमिक तथा सहपाठ्यगामी क्रियाएं छात्रों के लिए निरंतर आयोजित होती रहती है। छात्रों की बौद्धिक क्षमताओं का विकास करने के लिए ओलंपियाड, क्विज , ब्रेन गेम एवं अंतरविद्यालयी प्रतियोगिताएं इत्यादि निरंतर आयोजित की जातीहैं।जिससे छात्रोंमेंसामाजिक मूल्यों का विकास संभव होता है और उनमें सामाजिक समायोजन करने की क्षमता बढ़ती है। काउंसलर्स के द्वारा छात्रोंके मानसिक द्वंद्व को दूर करने का प्रयत्न किया जाता है और इस प्रकार सांवेगिक रूप से परिपक्व होने में छात्रोंकोसहायता मिलती है।जबकि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी माध्यम के विद्यालयों में तुलनात्मक रूप से इस प्रकार के कौशलों का विकास करने की बहुत अधिक क्रियाशीलता नहीं दिखाई देती है।

प्रस्तुत अध्ययनके निष्कर्ष इस बात की ओर भी संकेत करते हैं किसंवेगात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक समायोजन दोनों ही जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है यदि बालक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी सकारात्मक संवेगों का विकास नहीं कर पाया और समाज और समाज में समायोजित नहीं हो पाया तो उसकी शिक्षा ग्रहण करने का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा।(सैनी,2019))इस प्रकार प्रस्तुत शोध द्वारा माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को नई दिशा देने में सहायता मिल सकती है शिक्षक छात्र एवं छात्राओं को निर्देशन देकरउनके सामाजिक समायोजन के स्तर को उच्च कर सकते हैतथा छात्रों के सांवेगिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हिंदी माध्यम के विद्यालयोंमें भी समस्त प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों को तीव्र कर के छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जा सकताहै (जाय, मैथ्यू 2018)। प्रस्तुत शोध से प्रेरित होकर पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों में सुधार कर छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है साथ ही साथ शिक्षाविदों को पाठ्यक्रम निर्माण शिक्षण विधियों तथा विद्यालय वातावरण में अपेक्षित सुधार करने में सहायता मिल सकती है इस अध्ययन के द्वारा अभिभावकों को अपने बच्चों को उचित निर्देशन देने के लिए उनमेंसमुचितअंतर्दृष्टि का विकास किया जा सकता है (पवार,2018)। समुचित इस प्रकार यह अध्ययन छात्रों अभिभावकों शिक्षकों तथा नीति निर्माताओं सबके लिए ही महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौर, जस्सी (2012) एडजस्टमेंट अमंग स्टूडेंट्स *साइकोलिंग्वा*42(2)155-157सिंह, तीरथ एवं संदीपपन्नू(2011)इफेक्ट आफ एडजस्टमेंट आन जेंडर एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट*साइकोलिंग्वा*41(2)143-148
2. कुमार, सुनील (2014). इमोशनल मेच्योरिटी ऑफ एडोलिसेंट स्टूडेंट्स इन रिलेशन टूदेयर फैमिली रिलेशनशिप *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस*3(3)6-8
3. खरे, कनिका (2020)किशोर आक्रामकता एवं समायोजन एक अध्ययन*जर्नल आफ इमर्जिंग*

*टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च*7(2)467-480
4. गोरे, रश्मि एवं शिवनारायण (2019). सामान्य एवं अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन.पीरियोडिकरिसर्च,7(4)H12-H19
5. घटक,राखी(2018) और स्टडी ऑन सोशल एडजस्टमेंट ऑफ एडोलिसेंस *इंटरनेशनल जर्नल आफ साइंटिफिक डेवलपमेंट एंड रिसर्च*3(8)207-210
6. जॉय, मौली एवं ए.मैथ्यू (2018) इमोशनल मेच्योरिटी एंड जनरल वेल बीईंग ऑफ एडोलिसेंस *आई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ़ फार्मेसी*8 (5)01-06
7. जोज़,आर.एवंआर.सुजाथा(2012) ए कंपैरेटिव् स्टडी आफ इमोशनल मेच्योरिटी अमंगएडोलेसेन्ट बॉयज एंड गर्ल्स *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ नर्सिंग*4 (2)
8. डी.वी.,जॉन(1907). द स्कूल एंड सोशल प्रोग्रेस, चैप्टर वन, द स्कूल एंड सोसाइटी.शिकागो. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस 94-44
9. दीपशिखा; सुमन भनोट (2011). रोल ऑफ फैमिली एनवायरनमेंट ऑन सोशियो इमोशनल एडजस्टमेंट ऑफ एडोलिसेंट गर्ल्स इन रूरल एरिया ऑफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश *जर्नल ऑफ साइकोलॉजी*2(1)53-56
10. पवार,एस. एवं उनियाल एन.पी.(2018) उच्च प्राथमिक स्तर के बालक बालिकाओं के समायोजन एवं माता-पिता का उनके प्रति व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन. *प्राथमिक शिक्षा* 5(8) 55-56
11. पुष्प लता, सी.एवं एस. शशि कला (2015). काउंसलिंग अमंगएडोलेज़सेन्टस्टूडेंट्स. इंडियन जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च 5(12) 1-3
12. विभा रानी शर्मा (2011) कंपैरिजन ऑफ चिल्ड्रन एडजस्टमेंट प्रॉब्लम बिगिनिंग टू एल्कोहलिक एंड नान एल्कोहलिक पेरेंट्स*साइकोलिंगवा* 41(2)195-197
13. मैस्लो, ए.एच.(1943)अ थ्योरी ऑफ़ ह्यूमन मोटिवेशन. साइकोलॉजिकल रिव्यू 50(4):370-96 citedhttps://en.m.wikipedia.orgwiki
14. मी नी हसीओ एंड अदर्स (2013) इफेक्ट ऑफ ऑटिस्टिक ट्रेट्स ऑन सोशल एंड स्कूल एडजेस्टमेंट इन चिल्ड्रन एंड एडोलिसेंट्स : मॉडरेटिंगरोल्स आफ एज एंड जेंडर*रिसर्च इन डेवलपमेंट एंड डिसेबिलिटी*34(1)254-265
15. यादव, अजीत कुमार (2018)उच्चतर माध्यमिक स्तर के एकल एवं सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का अध्ययन *रीमारकिंगएन एनालाइजेशन* 2(1)82-85
16. रानी, अलका (2016) किशोरावस्था एवंशिक्षा:चुनौतियां और समाधान. इंटरनेशनल जर्नल फॉर इन्नोवेटिव रिसर्च इन मल्टीडिसीप्लिनरी फील्ड 2(7)209-212
17. रे,राजीव एंड अदर्स (2011) एडोलिसेंट काउंसलिंग. इंडियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल प्रैक्टिस 22(3)117-119
18. शर्मा,भारती (2012). एडजस्टमेंट इमोशनल मेच्योरिटी अमंग फर्स्ट ईयर कॉलेज स्टूडेंट्स *पाकिस्तान जर्नल ऑफ़ सोशल एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी*9 (3) 32-37
19. सैनी सतीश चंद्र (2019) किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. चेतना इंटरनेशनल एजुकेशनल जर्नल.4(3)
20. सिडनी एंड अदर्स(2000) सोशल एडजस्टमेंट ऑफ एडोलेसेन्ट्स एट रिस्क फॉर शिजोफ्रेनिया:द जेरूसलम इनफेन्ट डेवलपमेंट स्टडी*जर्नल ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ चाइल्ड एंड एडोलिसेंट साइकियाट्री*39(11),1406-1414न
21. सिंह,लक्ष्मीएवं विजय शुक्ला (2018) शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्याराखी लयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन *जर्नल आफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्च एंड एलाइड एजुकेशन* 15 (2)
22. सुब्बाराया के.;जी. विश्वनाथन (2011)अ स्टडी ऑफ इमोशनल मेच्योरिटी ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स.*रिसेंट रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी* 3(1) 153-155www.scholarjournal.orgwww.echetana.com
23. हंगल सुनीता एवं विजयलक्ष्मी ए. अमीना भावी(2007), सेल्फ कॉन्सेप्ट इमोशनल मेच्योरिटी एंड अचीवमेंट मोटिवेशन ऑफ द एडोलिसेंट चिल्ड्रन ऑफ इंप्लॉयड मदर्स एंड होममेकर्स *जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी*33(1)103-110
24. Ministry of Statistics & Programme Implementation, Government of India, Social Statistics Division
25. mospi.nic.in/sites/default/files/publication_reports/Youth_in_India-2017.pdf